कांन हक वाहिद अना, गैर मुस्लिम लेस सांनी।। १७ ।।

है खसम एक हमारा, बिना मुस्लिम नहीं कोई दूसरा।।

हम सब मुसलमान (सुन्दरसाथ) एक हैं। हमारा घर एक है। हमारा खसम एक है। मुसलमानों (सुन्दरसाथ रूहों) के सिवाय वहां दूसरा कोई नहीं है।

अनी हबो कुल्ल मुस्लिम, लाकिन जायद सिंध।

मेरे प्यारे तमाम मुस्लिम, लेकिन अधिक हैं सिन्ध के।

हाल अना कलिमे सिंध मुस्लिम, बाद कलिम अना हिन्द।। १८ ।।

अब मैं कहत हूं सिंध के मुसलमानों को,

पीछे कहूंगी मैं हिन्द के मुसलमानों को।।

मुझे सारे मुसलमान (सुन्दरसाथ) प्यारे हैं, पर सिन्ध के मुसलमान खासकर प्यारे हैं, इसलिए सिन्ध के मुसलमानों (सुन्दरसाथ) को कहती हूं। पीछे हिन्द के मुसलमानों को कहूंगी।

।। प्रकरण ।। ३४ ।। चौपाई ।। ११९५ ।।

सनन्ध–सिन्धी भाखा

कारण अरवा अर्सजी, चुआं सिन्ध गालाए।

जिन कलमें रसूल जे, सचो आकीन आए।। १ ।।

अर्स की रूहों के वास्ते सिन्ध की बोली में बोलती हूं। जिससे रसूल के कलमे पर तुम्हें सच्चा यकीन आ जाए।

मोमिन बलहा महंमद, जे सदाई जाण।

थियो सुहाग सभ केई, मेहेबूब अचो पाण।। २ ।।

मुहम्मद (श्यामाजी रूह अल्लाह) को मोमिन सदा से ही प्यारे हैं। उन सब मोमिनों को अब खुशी हुई, क्योंकि उनके लाडले खसम (प्रीतम) आए हैं।

चुआं कुजाडो हिंद के, सांई वडो डिन्यो सुहाग।

आयो रब आलम जो, सभनी उघड़्यो भाग।। ३ ।।

हिन्द के लोगों को क्या कहूं? खुदा ने इनको बड़ा सौभाग्य (सुख) दिया है जो सारी दुनियां के मालिक हिन्द में आए हैं और सबके भाग्य खुल गए हैं।

अदयूं रसूल पांहिजो, कोठे आयो इमाम।

आलम सभे उलट्यो, अची करे सलाम।। ४ ।।

हे बहन! अपने रसूल और इमाम मेंहदी बुलाने आए हैं। सारी दुनियां का यकीन इन पर आ गया है और सब आकर इनके चरणों में प्रणाम कर रहे हैं।

सिंधडी थियूं वधाइयूं, मीर पीर फकीर।

पुन्यूं उमेदूं सभनी, खिल्ली थेयां सभ खीर।। ५ ।।

सिन्ध की रहने वाली इन्द्रावती को सब ज्ञानी, अगुए, मीर, पीर और फकीर आ-आकर बधाइयां दे रहे हैं। सबकी चाहना पूरी हो गई और सब बड़े प्रसन्न होकर हंसते हैं।

Nijanand App

अची विठो हिंद में, त्रूठो चोडे तबक।
थेयूं सुहाग सिंधडी, जिन कलमें यकीन हक।। ६ ।।

इमाम मेंहदी (श्री प्राणनाथजी महाराज) हिन्दुस्तान में आकर बैठ गए हैं और चौदह तबकों के लोग इन पर फिदा हैं। इन्द्रावती सुहागिनी हो गई है। इनके वचन से सभी को पारब्रह्म पर यकीन आया है।

ईं अरब रसूलजी, बलही सिंध सुजाण।
यकीने पण अगरी, इस्क सिंधी खांण।। ७ ।।

जिस तरह से अरब वालों को रसूल साहब प्यारे हैं, उसी तरह से सिन्ध वालों को इन्द्रावती प्यारी हैं। इनका यकीन भी ऊंचा है। ज्ञान भी बड़ा है। इश्क (प्रेम) की तो खान हैं, अर्थात् प्रेम के ही स्वरूप हैं।

आऊं जोए इमाम जी, सिंधाणी सिरदार।
डिन्यो धणी सभ पांहिजो, मूंही हथ मुदार।। ८ ।।

सिन्ध की सिरदार (प्रधान) सखी इन्द्रावती कहती है कि मैं इमाम मेंहदी (श्री प्राणनाथजी) की अंगना हूं और धनी ने अपना सब मुद्दा (काम) मेरे हाथ में दे दिया है।

आयो मिठडो मेहेबूब, आऊं पण पिरन सांण।
अची बिठासी हिंद में, डिजां सिंधडी जांण।। ९ ।।

मेरे प्यारे लाडले मेहबूब आए हैं। मैं भी प्रीतम के साथ में हूं। अब वह हिन्दुस्तान (पन्नाजी) में जाकर बैठेंगे और इन्द्रावती को अपना कुल ज्ञान देंगे।

डिजां संडेहो सिंधडी, तूं घणूं बलही इमाम।
सिंध हिंद माधा थेई, पोरया जेदां रूम स्याम।। १० ।।

हे सिंधड़ी इन्द्रावती! तू इमाम मेंहदी को बड़ी प्यारी है। अब तू ही सबको तारतम वाणी का ज्ञान दे। सिन्ध की सखी इन्द्रावती हिन्द की सखी सुन्दरबाई से आगे हो गई। अब (रोम, श्याम) बिहारीजी के अनुयायी चाकला वाले मन्दिर के सभी लोग पीछे आवेंगे।

हांणे चुआं सचो सांईजी, जे अची बिठो हिंद।
ईसे मांधा अची करे, भगो दज्जाल जो कंध।। ११ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं अब मैं सच्चे धनी की पहचान कराती हूं जो हिन्दुस्तान में (पन्नाजी) में आकर बैठे हैं। ईसा रुहअल्लाह (श्यामा महारानी) भी आगे से इनके तन में बैठी हैं। जो दज्जाल सबके सिर चढ़ा था, वह भाग गया।

दीन कियाऊं हिकडो, भनी सभे कुफरान।
अर्स बका केयाऊं जाहेर, जित हक बिठो पांण।। १२ ।।

सब धर्मों को एक कर दिया है और सबके संशय मिटा दिए। अखण्ड घर परमधाम जहां पारब्रह्म स्वयं बैठे हैं, की पहचान सबको दी।

आसमान जिमी जे विचमें, व्यो कोए न चाए हक।
से हंद सभे उडी वेयां, जे सिजदा कंदी हुई खलक।। १३ ।।

अभी तक आसमान और जमीन के बीच में किसी को पारब्रह्म की पहचान नहीं थी। जहां सब संसार सिजदा बजाता था, वह सारे हंद (ठिकाने, धर्म स्थान) उड़ गए।

Nijanand App

सचो सांईं जडे आइयो, तडे व्यो पुजाए केर।
सुज कायम उगी थ्यो जाहेर, तडे उडी वेई सभे अंधेर।। १४ ।।

सच्चे मालिक (धनी, प्रीतम, खुदा) जब आ गए तो दूसरे (झूठे की) की पूजा कैसे हो? अखण्ड ज्ञान का सूर्य उदय हो गया तो अज्ञानता का सब अंधेरा उड़ गया।

धणी जमाने जो आइयो, तडे छुटी वेई तांणों बांण।
तित मोमिन उथी ऊभा थेयां, दोजख थेई कुफरान।। १५ ।।

आखिरी जमाने का मालिक आ गया तो सब धर्मों की खींचातानी छूट गई। मोमिन उठकर खड़े हो गए और काफिरों को दोजख मिली।

हित के के बुजरक आइया, जे नजीकी हक जा।
ए वडा दीन दुनी में, रूहें चाईन पातसा।। १६ ।।

यहां कोई-कोई ऐसे भी बड़े राजा हैं (शाकुण्डल-शाकुमार) जो पारब्रह्म के नजदीकी हैं। यह दीन और दुनियां में बड़े हैं और बादशाह कहलाते हैं।

सेर सरे मके मुलक, आई तेहां पुकार।
रह्या ईमान से सतजणां, व्या काफरे मार केयां कुफार।। १७ ।।

शरीयत के सिर मक्के से खबर आई कि ईमान पर सात लोग ही खड़े रहे। दूसरे को दज्जाल ने बेईमान बनाकर काफिर बना दिया।

नोट : कुरान का किस्सा है कि एक समय अरब में लोग नमाज पढ़ रहे थे, खुदा ने इम्तेहान (परीक्षा) के लिए, उसी समय सोने की मोहरों की वर्षा कर दी तो केवल सात जने नमाज पढ़ते रहे, बाकी सब मोहरें बटोरनें चले गए। नमाज के बाद सभी मोहरें कोयला बन गईं, ना दीन मिला न दुनियां।

सिंधमें अदियूं पांहिंज्यूं, हे खबर डिजां तिन।
असां गाल सुणी दम ना रहे, जा हुंदी रूह मोमिन।। १८ ।।

हे बहन! अपनी सिन्ध की सखी (इन्द्रावती) ने यह खबर दी है। हम इस बात को सुनकर जो भी रूह (मोमिन) होंगी, वे एक पल भी नहीं रुकेंगी।

सुख बका अर्स हिन जिमी, हिए गिनणजी वेर।
पोए आलम जडे उलट्यो, तडे लखे पूछे चोए केर।। १९ ।।

इस समय अखण्ड घर के सुख इस जमीन पर लेने का मौका है। पीछे तो सारा आलम (संसार) ही उमड़ कर आ जाएगा। तब लाखों में कौन पूछेगा और कौन कहेगा?

निसबती अची गडवी, पण ही सुख फजर कित।
सुख बका अर्स केर गिंनी सगे, जे नूर जमाल बुठडो हित।। २० ।।

अपनी निसबती (शाकुमार) मिली। पर इसे फजर (ज्ञान का) सुख नहीं है। वह अखण्ड घर के सुख को कैसे ले, जो साक्षात् बैठे नूर जमाल को नहीं पहचानती।

हे सुख मोमिन हमेसगी, अर्स में सभे गिनन।
पण जे सुख अर्सजा हिन जिमी, से व्या रे न्हाए रूहन।। २१ ।।

यह सुख मोमिनों को अर्श में हमेशा मिलते हैं, परन्तु अर्श के सुखों की जो लज्जत इस जमीन पर है, वह रूहों को कहीं नहीं मिलेगी।

Nijanand App

हकें डिंना सुख आलम में, त्रभेरका पांणके।
से सुख गिडां रात निद्रमें, के भत चुआं सुख ए।। २२ ।।

इस संसार में श्री राजजी महाराज ने हमें तीसरी बार सुख दिया है। उन सुखों को हमने रात की नींद में लिया, उनकी हकीकत कैसे कहूं?

जीं सुख सोणेंमें गिंनजे, तीं सुख गिडां रात।
डींहें सुख गिनजे जागंदे, ही आए रेहेमानी दात।। २३ ।।

जिस तरह से सपने के सुख होते हैं, उसी तरह से हमने रात्रि में ब्रज, रास के (घर की पहचान नहीं थी) सुख लिए। अब दिन के सुख जागृत होकर लीजिए। यहां मेहर के दाता श्री प्राणनाथजी ने खुदाई खजाना दिया है।

जे सुख डिंना हकें रातजा, तेजी पण हित लज्जत।
अर्सजा पण सुख हिंनमें, गिडां कई कोडी भत।। २४ ।।

धनी ने रात्रि (ब्रज, रास) में जो सुख दिए उनकी यहां लज्जत तो है, परन्तु अब अर्श के सुख इस जमीन पर कई करोड़ों तरह से लिए।

ए सिफत न जिभ चई सगे, सोई जांणे गिडां जिन।
सुख कीं चुआं हिन भूंअ जा, सुख डिंना महें बका वतन।। २५ ।।

जिसने यह सुख लिए हैं वही जानते हैं। इनकी सिफत (विशेषता) जबान से नहीं कही जा सकती। इस जमीन के सुखों को कैसे कहूं जो अखण्ड घर परमधाम में हमको जागृत होने पर मिलेंगे।

बरकत हिन रूहनजी, सुख गिडां सभनी मुलक।
सिफत न थिए हिन सुखजी, हे जा पेराई सभे खलक।। २६ ।।

रूहों की बरकत से सारी दुनियां के लोगों को सुख मिला। इसकी महिमा चौदह लोकों में पसर जाएगी।

कागर केयां सभ पधरो, खोल्या हकजा गंज।
सुख डिंनाऊं सभ बका, जिंनी रात डींहें हुआ डुख रंज।। २७ ।।

कुरान के सारे रहस्य खोल दिए। सबको पारब्रह्म की पहचान कराई। अखण्ड घर के सुख उन सबको दिए जो रात-दिन दुःख में ही डूबे पड़े थे।

कारैं सदीमें कयामत, लिखी मंझ कुरान।
से सभ केयांऊं पधरा, जे गुझ हुंदा निसान।। २८ ।।

कुरान में ग्यारहवीं सदी में कयामत होगी, लिखा है। उस कयामत के सब छिपे भेद (सातों बड़े निशान) खोल दिए।

सदी बारैं बी खलक, जिमी या आसमान।
आखिर थेई सभनी, समझे जा सुजान।। २९ ।।

बारहवीं सदी में जमीन या आसमान के सभी खलक की सब जहान को खबर हो जाएगी (फजर हो जाएगी)।

Nijanand App

कायम सदी तेरहीं, उथींदा निरवाण।
महामत जोए इमामजी, जाहेर क्याऊं फुरमान।। ३० ।।

तेरहवीं सदी में उठकर खड़े हो जाएंगे। श्री महामतिजी कहती हैं कि मैं इमाम मेंहदी की बीबी हूं और कुरान के छिपे भेद (रहस्य) जाहिर करती हूं।

।। प्रकरण ।। ३५ ।। चौपाई ।। १२२५ ।।

सनन्ध–ईसा इमाम के कजा की

इत ईसा मसी आए के, पेहेले किया सरंजाम।
काटे आउध दज्जाल के, पीछे आए रसूल इमाम।। १ ।।

यहां ईसा मसीह (श्यामा महारानी) ने आकर सब इन्तजाम पहले से कर दिया और दज्जाल के हाथ काट डाले। उनके बाद में हकी स्वरूप इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी आए।

अब सब्दातीतकी सब्द में, सोभा बरनी न जाए।
जो कछू कहूं सो सब्द में, बोलूं कौन जुबांए।। २ ।।

अब ऐसे शब्दातीत की शोभा का वर्णन करना सम्भव नहीं है। जो कुछ मैं कहती हूं वह माया के ही शब्द हैं। उनकी महिमा इस जबान से नहीं हो सकती।

खूबी तखत न केहे सकूं, इन जुबां के जोर।
जांनूं रात कुफर की मिट गई, हुआ दिन जाहेर भोर।। ३ ।।

जिस तख्त पर बैठकर कजा करेंगे उस तख्त की शोभा इस जबान से नहीं कह सकती। लगता है अन्धकार और संशय की रात मिट गई है। ज्ञान का सवेरा हो गया है।

हिसाब नहीं उजास को, आगे ले खड़ा लदुन्नी नूर।
जाए न बरन्यो इन जुबां, खड़ी अर्स अरवा हजूर।। ४ ।।

इस उजाले का भी हिसाब नहीं है। यह तारतम वाणी का नूरी उजाला है जिसका वर्णन इस जबान से नहीं होता। इस ज्ञान से हम पारब्रह्म की अंगनाएं उनके सामने खड़ी हैं।

आगे खड़ा असराफील, और जबराईल हुकम।
जोस सब रूहन पर, वतन बका खसम।। ५ ।।

उनके सामने जागृत बुद्धि का फरिश्ता असराफील खड़ा है और हुकम का स्वरूप तथा जबराईल खड़ा है। रूहों को घर का और प्रीतम का जोश चढ़ा है।

यों बैठे तखत इमाम, सिर छत्र कई चंवर।
रसूल अली आए मिले, हुई बधाइयां घर घर।। ६ ।।

इस तरह न्याय के तख्त पर इमाम (श्री प्राणनाथजी) बैठे हैं। उनके सिर पर छत्र शोभा दे रहा है। कई चंवर डुलाए जा रहे हैं। रसूल साहब तथा अली (महाराजा छत्रसाल) आकर मिले तो घर-घर में बधाई बजी।

गुझ थे मोमिन अर्स के, ताकी जाहेर हुई खबर।
सो बैठे घेर इमाम को, हुई बधाइयां घर घर।। ७ ।।

परमधाम के मोमिनों को संसार में कोई नहीं जानता था। वही अब इमाम साहब को घेर कर बैठे हैं, इसलिए सबको पहचान हो गई और घर-घर खुशियां हुईं।

Nijanand App